कार्यालय प्राचार्य, शासकीय माँ महामाया महाविद्यालय खड़गवां
जिला–मनेन्द्रगढ़–चिरमिरी–भरतपुर (छ.ग.)
AFFILIATED TO SANT GAHIRA GURU UNIVERSITY, SARGUJA, AMBIKAPUR (C.G.)
EMAIL - govtnaveencollege@gmail.com COLLEGE CODE - 3706
WEBSITE - http://govtmmcollegekhadgawan.in/ AISHE CODE - C-9695

3.3.2. Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

Response:

S.l No.	Content	Page No.
01	Report of published research paper per teacher	02-02
02	Scan copy of the research article	03-16

I.Q.A.C. Incharge

IQAC Co-ordinator

PRINCIPAL
Govt. Maa Mahamaya College Khadgawan
Dist-Manendragarh-Chirimiri-Bharatpur(C.G.)

Principal

Report of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five Sessions:

NAME OF THE AUTHOR: -DR. DEEPAK SINGH

Sl.	Title of paper	Year of publication	Department of the Teacher	Name of Journal	ISSN/ISBN number	Web-links of journal
01	बौद्ध धर्म दर्शन और मार्क्सवाद के साथ दलित साहित्य का अंतर्सम्बन्ध	2018	हिन्दी	मध्य भारती	0974–0066	https://sskhannagirlsdc.ac.in/web.php?pageurl=arjs
02	दलित साहित्य की वैचारिक बहस के कुछ आयाम	2019	हिन्दी	शोधश्री	0974–7958	https://www.dei.ac.in/dei/index.php?option=com_content&view=article&id=865:shodhshri-patrika&catid=16:news-and-updates&Itemid=101
03	नवजागरण और स्त्री प्रश्न	2022	हिन्दी	अनविक्षा रिसर्च जनरल ऑफ एस.एस.के.जी.डी.सी.	2581–8163	https://sskhannagirlsdc.ac.in/web.php?pageurl=arjs
04	दलित विमर्श में स्त्री–प्रश्न	2022	हिन्दी	सम्मेलन पत्रिका	2278–1773	https://portal.issn.org/resource/ISSN/2278-1773

I.Q.A.C. Incharge
IQAC Co- ordinator

PRINCIPAL
Govt. Maa Mahamaya College Khadgawan
Dist-Manendragarh-Chirimiri-Bharatpur(C.G.)
Principal

74

जनवरी-जून, 2018

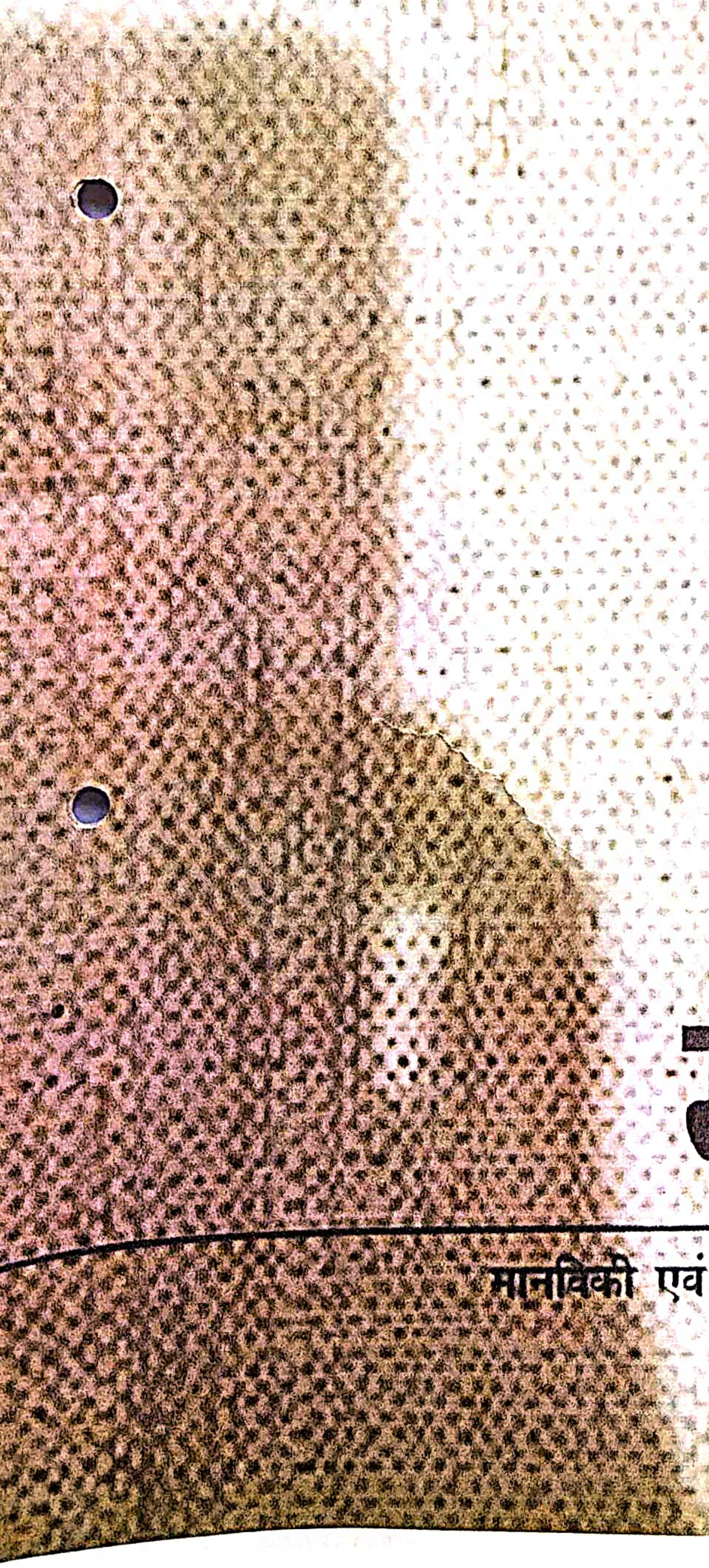

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका
ISSN 0974-0066
(अंक-74, जनवरी-जून, 2018)

संरक्षक
प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक
प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक
प्रो. निवेदिता मैत्रा
डॉ. पंकज चतुर्वेदी
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश) - 470003
दूरभाष : (07582) 264455
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

अनुक्रमणिका

भास्कराचार्य रचित गणितीय कृति लीलावती : एक अवलोकन 5
रामप्रसाद

आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में छायावाद 23
कामिनी

बौद्ध धर्म-दर्शन और मार्क्सवाद के साथ दलित साहित्य का अंतर्सम्बन्ध 32
दीपक सिंह

भारतीय ज्ञान परम्परा में कामशास्त्र का इतिहास 38
राघवेन्द्र मिश्र

धर्म और विज्ञान का अंतर्विरोध 59
अनिल कुमार तिवारी

कमलेश्वर के 'काली आंधी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श 68
संजीव कुमार विश्वकर्मा

शास्त्रीय संगीत में लोक संगीत के तत्त्व 73
बृजेश मिश्रा

गाँधी के राष्ट्रवाद की अवधारणा 83
पंकज सिंह

भरहुत की कला में प्रतिबिम्बित लोक जीवन 94
कृष्ण देव पाण्डेय

समकालीन समाज-दर्शन और स्वामी विवेकानन्द 103
शैल कुमारी

मध्यप्रदेश की संस्कृति में छतरपुर अंचल की भूमिका 118
विशाल विक्रम सिंह

एशियाई परिदृश्य और भारत-चीन संबंध 128
नेहा निरंजन

'उस जनपद का कवि हूँ' : कविता के सरोकार 135
दुर्गेश वाजपेयी

महिला सशक्तीकरण में महिला पुलिस की भूमिका के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण (सागर नगर के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन) 146
विवेक मेहता

शोध पत्रिका
2019
मूल्य : 100 रुपए

ISSN : 0974-7958

शोधश्री

संरक्षक :
डॉ. पी. के. कालड़ा
निदेशक, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा

परामर्श :
प्रो. जे. के. वर्मा, डीन, कला संकाय
प्रो. शर्मिला सक्सेना, अध्यक्ष हिंदी विभाग

संपादक :
डॉ. प्रेमशंकर सिंह
डॉ. बृजराज सिंह

संपादन सहयोग :
डॉ. रंजना पांडे
अरविंद, पूजा यादव,
प्रीति, गुर प्यारी यादव

संपादकीय संपर्क :
हिंदी विभाग, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
ई-मेल : shodhshreedei@gmail.com
मोबाइल : 9838709090, 9415703379

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा

प्रकाशक, मुद्रक दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग़, आगरा के लिए दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग़, आगरा से प्रकाशित और आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, एम.-28, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित। संपादक : डॉ. प्रेमशंकर सिंह/डॉ. बृजराज सिंह

संपादकीय

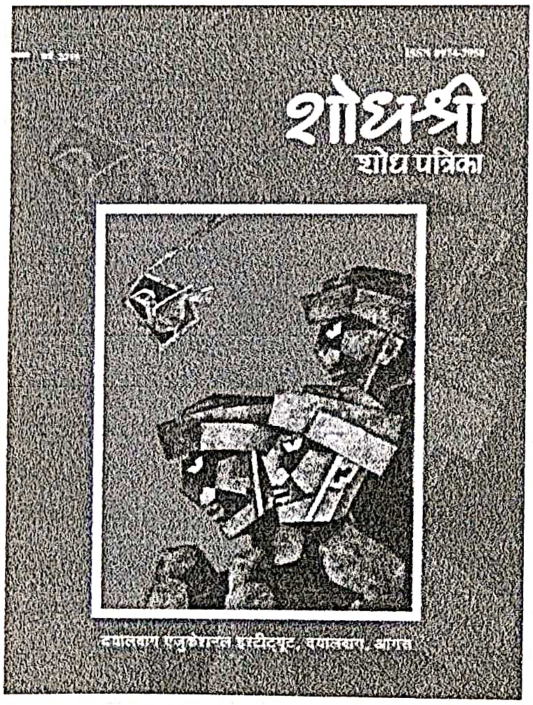

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की शोध पत्रिका शोधश्री का प्रकाशन 2009 में प्रारंभ हुआ था। इन 10 वर्षों में शोधश्री के कई महत्त्वपूर्ण अंक जैसे— दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श प्रकाशित और बहुप्रशंसित भी हुए हैं। अभी तक इसमें हिन्दी भाषा और साहित्य से संबंधित शोध आलेख प्रकाशित होते रहे हैं, इस अंक में हिंदी भाषा और साहित्य के साथ-साथ दूसरे अनुशासनों के भी कुछ शोध आलेख शामिल किए गए हैं। अगले अंकों में हमारी कोशिश रहेगी कि दूसरे अनुशासन जैसे— समाज विज्ञान, अभियांत्रिकी, वाणिज्य, शिक्षा, विज्ञान, आदि अनुशासनों के शोध आलेखों की संख्या बढ़ाई जाए। इन अनुशासनों के हिन्दी माध्यम में लिखे गए शोध आलेखों के लिए बेहतर जगह उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता होगी। हिंदी के पाठकों या शोधार्थियों के लिए अन्य अनुशासनों की यह सामग्री सरलता से उपलब्ध हो, इसका प्रयास किया जाएगा। शोधश्री के माध्यम से हमारी कोशिश रहेगी कि शोधार्थियों को अवसर और जगह उपलब्ध हो सके। हम शोधश्री की गुणवत्ता उत्कृष्टता बनाए रखने का पूरा प्रयास करते हैं, मानविकी और कला संबंधित विषयों के लिए हिंदी माध्यम में उत्कृष्ट शोधों के लिए स्तरीय शोध पत्रिका का अभाव कभी कभी दिखाई देता है। इसके साथ ही शोधश्री दूसरे अनुशासनों के शोध आलेखों को भी हिंदी माध्यम में प्रकाशित और प्रसारित करने का एक माध्यम बने, हमारा ऐसा प्रयास रहेगा।

—प्रेमशंकर

दलित साहित्य की वैचारिक बहस के कुछ आयाम

डॉ. दीपक सिंह*

हिन्दी में दलित विमर्श की शुरुआत मोटे तौर पर अस्सी के दशक से मानी जा सकती है। पिछले लगभग तीस-पैंतीस वर्षों में इसने एक ठोस यात्रा तय की है। परंपरागत सामाजिक और साहित्यिक मूल्यों के साथ इसकी टकराहट ने वैचारिकी के क्षेत्र में गंभीर उथल-पुथल मचाई है। हिन्दी में बहुतेरे साहित्यिक आंदोलन हुए लेकिन संत साहित्य के बाद केवल दलित आंदोलन ऐसा है जिसने साहित्य और विमर्श की जमीन को पूरी तरह बदल कर रख दिया है। यह बात कहते हुए मैं न तो प्रगतिशील आंदोलन को भूल रहा हूँ और न ही निराला, प्रेमचंद्र, नागार्जुन जैसे रचनाकारों के योगदान को कम कर के आंक रहा हूँ। हर युग में साहित्य की जमीन बदली है उसके मूल्यांकन के औजार बदले हैं लेकिन दलित विमर्श जिस बदलाव की आकांक्षा को लेकर आगे बढ़ रहा है वह इन सबसे आगे की चीज है। दलित विमर्श की शुरुआत नकार से होती है, यहाँ साहित्य यश, सम्मान, आनंद, कल्याण के लिए न होकर संघर्ष के लिए है, बराबरी के हक के लिए है। दलित यथार्थ की परतें हमें उस संसार की तरफ ले जाती है जहां श्रम की अमानवीयता है, मरे हुए जानवर का मांस है, गोबर से बीने हुए गेहूं की रोटी है और न जाने कितना कुछ है। यह पूरी दुनिया लगभग अछूती रही थी थोड़ा बहुत प्रेमचंद और नागार्जुन जैसे संवेदनशील कलाकारों ने उसे छुआ था। मार्क्सवाद के प्रभाव में बहुत सारे साहित्यकारों ने मजदूर मेहनतकश जनता को साहित्य के केन्द्र में ला खड़ा किया। इन साहित्यकारों ने श्रम के सौंदर्य को महिमा मंडित किया, सामंतवाद पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष की आवाज को बुलंद किया मतलब वर्गसंघर्ष को अपने साहित्य सृजन का आधार बनाया। हिन्दी क्षेत्र के लिए यह बड़ी परिघटना थी लेकिन साहित्य की यह धारा भी श्रम की अमानवीयता तक नही पहुंच सकी, जातीय उत्पीड़न से उपजी हजारों पीड़ाओं को स्वर देने में नाकाम ही रही। यही वह कारण है कि दलित साहित्य ने सबसे पहले स्वानुभूति के आधार पर स्वयं को साहित्य की अन्य धाराओं से अलगाया तथा स्व और अन्य की जो बहस ज्योतिबा फुले और अंबेडकर के यहाँ शुरू हुई थी उसी को आधार बनाकर अपनी अस्मिता व पहचान को निर्मित किया।

हिन्दी क्षेत्र मे दलित साहित्य के उभार के साथ ही कई और घटनाएँ घट रहीं थी एक तरफ मण्डल कमीशन की सिफारिशों के खिलाफ उग्र सवर्ण आंदोलन था तो दूसरी ओर उग्र धार्मिकता के जरिए सांप्रदायिक माहौल बनाया जा रहा था और इन्हीं सब के बीच भारत में वैश्वीकरण और उदारीकरण का घोड़ा भी प्रवेश कर चुका था। कहने का मतलब दलित वैचारिकी का रास्ता आसान नहीं था उस पर इन तमाम परिघटनाओं का गहरा असर पड़ा है और इसे लेकर दलित साहित्य में गंभीर बहस भी छिड़ी है। दलित साहित्य के साथ सबसे शानदार बात यह रही कि इसने कभी बहस से किनारा नहीं किया बल्कि हर सवाल पर गहरे विमर्श को जन्म दिया मसलन अंग्रेज न आए होते तो दलितों का क्या होता? बाजार और दलित मुक्ति, दलित कौन है? राष्ट्र, धर्म, जैसे मुद्दों के साथ-साथ दलित साहित्य क्या है? कौन लिख सकता है? आदि-आदि। यहाँ पर हम मुख्य रूप से दो बहसों को देखने का प्रयास करेंगे पहला दलित विमर्श में मौजूद स्व और अन्य की परिकल्पना और दूसरा दलित साहित्य कौन लिख सकता है?

सबसे पहले हम यह देखने का प्रयास करते है कि दलित कौन? यह दलित विमर्श की आधारभूत बहस है शब्दकोशीय अर्थ के अनुसार दलित शब्द का आशय है—जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ,

---

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शा. नवीन महाविद्यालय, खड़गवां, जिला कोरिया (छ.ग.)
मोबाइल : 7587305846
ई-मेल : deepak8768@gmail.com

है और इतना ही नहीं ब्राह्मणवादी व्यवस्था का अंत होने तक संघर्षरत रहने की घोषणा भी करता है। मलखान सिंह अपनी कविता 'सुनो ब्राह्मण' में कहते हैं—

हमारी दासता का सफर
तुम्हारे जन्म से शुरू होता है
और इसका अंत भी
तुम्हारे अंत के साथ होगा।''[5]

इसी कविता के अगले भाग में मलखान सिंह ब्राह्मणों को चुनौती देते हुए कहते हैं—

एक दिन
अपनी जनानी को
हमारी जनानी के साथ
मैला कमाने भेजो।
तुम मेरे साथ आओ
चमड़ा पकाएंगे दोनो मिल बैठ कर।
... ...
तभी जान पाओगे तुम
जीवन गंध को
बलवती होती है
जो देह की गंध से''[6]

मलखान सिंह की कविता को दलित साहित्य के भीतर 'स्व' और 'अन्य' को परिभाषित करने वाले रूपक के बतौर देखा जा सकता हैं। दलित साहित्यकारों ने स्व और अन्य के बोध को बहुत गहराई से आत्मसात किया है जिसकी अभिव्यक्ति दलित कहानियों, आत्मकथाओं और कविताओं में व्यापक रूप से हुई है।

दलित साहित्य है क्या? इसे कौन लिख सकता है? इन प्रश्नों पर हमें एक लंबी बहस देखने को मिलती है। स्व और अन्य के मुहावरे में देखें तो भी हमें सचेत अन्यकरण दिखाई पड़ता है। दलित चिंतक दलित चेतना, स्वानुभूति, भोगा हुआ यथार्थ जैसी कोटियों के माध्यम से अब तक रचे गए साहित्य से अपना स्पष्ट अलगाव घोषित करते हैं- ''साहित्य उसके लिए कल्पनाओं की विस्तृत ऊँचाई है, जहाँ खड़े होकर कल्पना के बलबूते पर वह तमाम दुनिया के यथार्थ को देख लेने की क्षमता का भ्रम पाले हुए है।''[7] अपने अलगाव को स्पष्ट करने के क्रम में लगभग सभी दलित चिंतक साहित्य को परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। कंवल भारती ने दलित साहित्य की व्याख्या करते हुए लिखा है दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है। अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा हैं, दलित साहित्य उनकी उसी अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला नहीं, बल्कि जीवन और जिजीविषा का साहित्य है। इसलिए कहना न होगा कि दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य की कोटि में आता है।''[8] यहाँ हमें अलगाव के साथ लगाव के भी कुछ सूत्र मिलते है 'कला कला के लिये नहीं' प्रगतिशील आंदोलन के मुख्य नारों में एक था और शायद यही कारण है कि दलित विमर्श प्रगतिशील आंदोलन के साथ गंभीर बहस में उतरता है। इस बहस को यहीं छोड़ दे तो हम पाते है कि भोगे हुए यथार्थ का वर्णन ही अलगाव का केन्द्रीय तथ्य है। अब सवाल यह उठता है कि क्या दलित जाति में जन्मा कोई भी व्यक्ति यदि वह भोगे हुए यथार्थ का वर्णन करता है तो उसे दलित साहित्य मान लिया जाएगा? इस प्रश्न का उत्तर दलित साहित्य ने अपने आन्दोलनात्मक इतिहास में ढूंढा है और साफ तौर पर रेखांकित किया है कि दलित की व्यथा, दुख, पीडा, शोषण का विवरण देना या बखान करना ही दलित चेतना नहीं है, या दलित पीड़ा का भावुक और अश्रु विगलित वर्णन, जो मौलिक चेतना से विहीन हो, चेतना का सीधा संबंध दृष्टि से होता है जो दलित की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक भूमिका के तिलिस्म को तोड़ती है, वह है दलित चेतना।''[9] दरअसल दलित साहित्य का संबंध अंबेडकर वाद द्वारा निर्मित उस चेतना से है जो विद्रोह और नकार को लेकर आगे बढ़ती है। यह चेतना दलितों को अपनी दुर्दशा के मानवकृत कारण को समझने में मदद करती है और उसे आत्म बोध के उस स्तर पर ले जाती है जहां से वह तथाकथित सभ्य समाज को प्रश्नांकित करने का ज्ञानात्मक बोध अर्जित करता हैं। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व जैसे मूल्यों की उसकी मांग और उसके लिए संघर्ष इसी ज्ञानात्मक निर्मिति का प्रतिफलन है।

दलित साहित्य केवल दलित ही लिख सकता है यह बात एक ऐतिहासिक विचारक्रम की उपज है। यह कोई एका-एक प्रकट हुआ नारा नहीं था बल्कि इसके पीछे एक सुचिन्तित राजनीति काम कर रही थी और इस राजनीति की यह सफलता ही कही जाएगी उसने आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में रखी। तमाम आरोपों-प्रत्यारोपों को झेलते हुए विमर्श और राजनीति के नाजुक संतुलन को साध कर आज वह बेहतर विश्लेषण व आत्मविश्लेषण की ओर बढ़ चुका है। बहरहाल हिन्दी में

भी इसके लिए चल रहे संघर्ष में उन्हीं का हाथ सबसे ज़्यादा है और होना भी चाहिए। इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी यह बात सही है कि दलित साहित्य दलित जाति से आए लेखकों का साहित्य हैं। आज के दलित साहित्य को इसी ऐतिहासिकता के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।''[14] आज दलित साहित्य वेदना और नकार से आगे बढ़कर विश्लेषण के चरण में पहुंच चुका है और यह मानने को तैयार है कि साहित्य सृजन के कई स्रोत हो सकते हैं। इस संदर्भ में गंगाधर पानतावडे से बजरंग तिवारी की बात-चीत का उल्लेख किया जा सकता है पानतावड़े जी साहित्य के तीन स्रोत मानते हैं—1. स्वयं जानकर, भोगकर प्राप्त किया गया अनुभव 2. दूसरे को देख कर, समझकर संवेदना के जरिये प्राप्त ज्ञान, अप्रत्यक्ष अनुभव तथा 3. कल्पना करके। कल्पना का सच से कोई सीधा रिश्ता नहीं होता। बाकी दो को पानतावड़े जी जाणीव तथा सहजाणीव कहते हैं: 'जाणीव से ही साहित्य रचा जा सकता है। लेकिन सहजाणीव (संवेदना) का साहित्य झूठा नही होता। वह भी सच है लेकिन अनुभव के ताप से रहित। प्रेमचंद और ओमप्रकाश वाल्मीकि का यही फर्क समझना चाहिए।''[15]

दलित साहित्य के भीतर सहानुभूति की जगह स्वानुभूति, शिल्प और कला की जगह अंतर्वस्तु की प्राथमिकता, मनोरंजन या आनंद की जगह संघर्ष और पीड़ा का घोष उसे एक क्रांतिकारी स्वर प्रदान करता है। साहित्य के बने-बनाए ढांचे में दलित साहित्य को जगह मिलनी संभव नहीं थी उसे अपनी जमीन ख़ुद ही तैयार करनी थी अत: उसे अन्य से अलग होना भी था और दिखना भी था। शायद इसीलिए उसका आरंभिक स्वर बहुत ही ज़्यादा आक्रामक दिखाई पड़ता है। आज की स्थिति में दलित साहित्य एक मजबूत परिवर्तनकामी धारा के रूप में अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुका है। इस समय वह बेहतर व्याख्या-विश्लेषण व आत्मालोचन की स्थिति में है। कई दलित चिंतकों ने अन्य परिवर्तन कामी धाराओं के साथ मजबूत एका बनाकर एक साझा संघर्ष खड़ा करने की वकालत की है। वर्ग और वर्ण का द्वंद धुल कर जय भीम कामरेड तक पहुंच गया है। मुक्त चिंतन और अभिव्यक्ति से लेकर खाने की आजादी की हत्या के इस दौर में दलित साहित्य और चिंतन भी एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है। दरअसल यह नई जिम्मेदारियां और नए सोपान तय करने का दौर है। दलित साहित्य के अब तक के विकास क्रम को देखते हुए यह उम्मीद की जा सकती है कि जल्द ही वह संघर्ष के नए क्षेत्रों में प्रवेश करेगा।

संदर्भ-सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2001 पृ. 13
2. कंवल भारती: युद्धरत आम आदमी (अंक 41-42) 1998 पृ. 41
3. सं. एल.जी. मेश्राम, विमलकीर्ति, महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली (1) (गुलामगीरी) राधाकृष्ण प्रकाशन, संशोधित संस्करण 1996 पृ. 152
4. सं. एल.जी. मेश्राम, विमलकीर्ति, महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली (ब्राह्मण की चालाकी) राधाकृष्ण प्रकाशन, संशोधित संस्करण 1996 पृ. 101
5. सं. कंवल भारती: दलित निर्वाचित कविताएं, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद 2006 पृ. 48
6. वही पृ. 49
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2001 पृ. 39
8. कंवल भारती : युद्धरत आम आदमी (अंक 41-42) 1998 पृ. 41
9. ओमप्रकाश वाल्मीकि: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2001 पृ. 28-29
10. सं. चमनलाल: दलित अश्वेत साहित्य कुछ विचार, भारतीय उच्च संस्थान शिमला 2001 पृ. 23
11. सं. सदानंद शाही: दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद, प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर 2005 पृ. 52
12. वही पृ. 192
13. ओमप्रकाश वाल्मीकि: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2001 पृ. 40
14. सं. चमनलाल: दलित अश्वेत साहित्य कुछ विचार, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला 2001 पृ. 45
15. बजरंग बिहारी तिवारी: दलित साहित्य एक अंतर्यात्रा, नवारूण प्रकाशन, 2015 पृ. 24

ISSN : 2278-1773
UGC Care List No. 98

सम्मेलन-पत्रिका

शोध-त्रैमासिक

भाग-१०७, संख्या-२

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-२११००३
[illegible]//hindisahityasammelan.org.
[illegible]

सम्मेलन पत्रिका

(शोध-त्रैमासिक)

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible] : [illegible]

प्रधान सम्पादक

[illegible]

सम्पादक

[illegible]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

विषय-सूची

सम्पादकीय

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
आलेख			
१.	देशभक्त-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	श्रीनारायण पाण्डेय	७–१४
२.	निराला के काव्य में दलित चेतना	डॉ० सविताकुमारी श्रीवास्तव	१५–२१
३.	भाषा में अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेणीयता का नया स्वरूप	डॉ० सीमा जैन	२२–२७
४.	प्रसाद काव्य का वैशिष्ट्य	डॉ० कमलेश सिंह	२८–३४
५.	नीरजा माधवकृत 'यमदीप' उपन्यास में स्त्री मुक्ति का संघर्ष	डॉ० ममता खांडल	३५–४२
६.	आदिवासी समाज में अस्मिता तलाशती स्त्री	डॉ० धर्मेन्द्र कुमार	४३–४७
७.	निराला का काव्य-वैविध्य	डॉ० कामिनी	४८–५३
८.	दलित विमर्श में स्त्री-प्रश्न	डॉ० दीपक सिंह	५४–५८
९.	हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथाओं में वर्णित समाज का स्वरूप	अनुराधा शुक्ला	५९–६४
१०.	स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और महादेवी वर्मा का स्त्रीवादी चिन्तन	शिवदत्त	६५–७०
११.	अज्ञेय के यात्रा-वृत्तान्तों में सांस्कृतिक दृष्टि : विदेशी यात्राओं के विशेष सन्दर्भ में	रज्जन प्रसाद शुक्ल	७१–७८
१२.	हिन्दी साहित्य पर गाँधी दर्शन का प्रभाव	किरन मिश्रा	७९–८७
१३.	सखी भावोपासना में राधा बल्लभ सम्प्रदाय का योगदान	खुशबू वर्मा	८८–९३

ISSN 2581-8163

ANVEEKSHA RESEARCH JOURNAL OF SSKGDC

(A Peer Reviewed Journal)

ARJ SSKGDC

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, PRAYAGRAJ

(A Constituent PG College of University of Allahabad)

Accredited 'A' Grade by NAAC

अन्वीक्षा रिसर्च जरनल ऑफ एस.एस.के.जी.डी.सी.

ANVEEKSHA RESEARCH JOURNAL OF SSKGDC

(A Peer reviewed Interdisciplinary Journal)

Editor

Prof. Lalima Singh, Principal

Editorial Board

- Dr. Meenu Agrawal
- Dr. Rachana Anand Gaur
- Dr. Manjari Shukla
- Dr. Harish Kumar Singh
- Dr. Sheo Shankar Srivastava
- Dr. Ruchi Malviya
- Dr. Riya Mukherjee
- Dr. Saumya Krishna
- Dr. Nishi Seth
- Dr. Jyoti Baijal
- Dr. Tanushree Roy
- Dr. Ravi Kant Singh

VOL 5 ISSUE 1 2022 ISSN 2581-8163

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, PRAYAGRAJ

(A Constituent PG College of University of Allahabad)

(Accredited 'A' Grade by NAAC)

अनुक्रम

S. No.	Title		Page No.
1.	From the desk of the Editor	Prof. Lalima Singh	1
2.	अन्वीक्षा : अन्तर्दृष्टि	डॉ. मंजरी शुक्ला	3
3.	राजनांदगाँव जिले के शिल्पकला में अंकित रामकथा	प्रो. आर.एन. विश्वकर्मा	4
4.	संस्कृत वाङ्मय की विकास यात्रा में पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का योगदान	डॉ. प्रभात कुमार सिंह	10
5.	एरच से प्राप्त क्षतिपूर्ति विभाग के अमात्य का मृण्मुद्रांक	डॉ. ओ.पी.एल. श्रीवास्तव	17
6.	लोकमंगल की अवधारणा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल	डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर	19
7.	प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना	डॉ. सुरेन्द्र विक्रम	25
8.	हिन्द स्वराज : उपनिवेशवादी मानसिकता और गाँधी का स्वप्न	डॉ. आभा त्रिपाठी	33
9.	'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' और स्त्री इतिहास दृष्टि	डॉ. वीरेन्द्र कुमार मीना	42
10.	उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव और हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप	डॉ. उर्वशी	56
11.	छायावाद कालीन काव्य–समीक्षा में कला–चिन्तन और अभिव्यंजनावाद	डॉ. हेमराज डोगरा	66
12.	नवजागरण और स्त्री प्रश्न	डॉ. दीपक सिंह	82
13.	सूर्य आत्मा जगतस्थरथुषश्च	डॉ. आशुतोष द्विवेदी	91
14.	The Revival of Buddhism in India in the 20th Century(An Evaluation of The Efforts of Dr. B.R. Ambedkar)	Dr. Aparana	98